प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

ग्राम अन्जनीपुर, सितारगंज में दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पन्तनगर। 8 फरवरी 2025। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के आर्थिक सहयोग विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, काशीपुर के संयुक्त तत्वावधान में ब्लॉक सितारगंज के अन्जनीपुर गाँव में 'मशरूम आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों और उनके विपणन के माध्यम से जनजातीय समुदाय को सशक्त बनाना' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य जनजातीय महिलाओं को मशरूम उत्पादन की आधुनिक तकनीक एवं मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्माण की प्रक्रिया से अवगत कराना था, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। प्रशिक्षण में महिलाओं को व्यावहारिक रूप से मशरूम उगाने की विधि, मशरूम से बने विभिन्न उत्पादों का निर्माण, उनके विपणन तथा आय वृद्धि की रणनीतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में मशरूम केंद्र, पंतनगर के संयुक्त निदेशक डा. एस.के. मिश्रा, बागवानी विभाग के प्राध्यापक डा. ओमवीर, कृषि विज्ञान केंद्र की संयुक्त निदेशक डा. प्रतिभा सिंह तथा परियोजना अन्वेषक एवं सहायक प्राध्यापिका डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल उपस्थित रहीं।

संयुक्त निदेशक डा. एस.के. मिश्रा ने मशरूम के भंडारण एवं पैकेजिंग तकनीक पर विस्तार से प्रकाश डाला। डा. ओमवीर ने मशरूम के मूल्यवर्धित उत्पादों की जानकारी दी, जबकि डा. प्रतिभा सिंह ने मशरूम से बनने वाले बिस्कुट, पापड़ एवं स्नैक्स के बारे में बताया। परियोजना अन्वेषक डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने इस प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह कार्यक्रम महिलाओं को स्वावलंबी एवं उद्यमशील बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं को मशरूम उत्पादन की टोकरी विधि, मशरूम से बने उत्पादों का निर्माण, विपणन तकनीक, पैकेजिंग एवं व्यवसाय प्रारंभ करने के तरीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही, प्रशिक्षण में भाग लेने वाली महिलाओं को मशरूम उत्पादन हेतु आवश्यक बैग एवं केसिंग सामग्री भी वितरित की गई, जिससे वे अपने स्तर पर स्वरोजगार की दिशा में कदम बढा सकें। इस कार्यक्रम मेंहेमा, बिंदु, प्रकाश रावत ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। यह प्रशिक्षण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी, जिससे वे अपने परिवार एवं समाज में आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत कर सकेंगी।